IJAER/ September-October 2023 /Volume-12/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

"अद्भुत चिकित्सक ऋभुगण : ऋग्वैदिक परिप्रेक्ष्य"

अर्चना भार्गव
सह–आचार्य, संस्कृत–विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

शोध–सारांश

अश्विनीकुमारों के समकक्ष माने जाने वाले ऋभुगण एक कुशल चिकित्सक के रूप में ऋग्वेद में दृष्टिगोचर होते हैं। अश्विनीकुमारों ने च्यवन ऋषि को युवा बनाया था। इसी का अनुसरण करते हुए ऋभुगणों ने भी अपने वृद्ध माता–पिता को पुनः युवा बनाया। मनोवैज्ञानिक चिकित्सक के रूप में कार्य करते हुए किसी जादुई ढंग से नहीं, अपितु मानवीय परिचर्या द्वारा अपने माता–पिता को युवा बनाया था। शल्य–क्रिया द्वारा चर्म से सर्वप्रेरक, विश्वरूपा गौर का सृजन किया। उस गौ की रचना बृहस्पति के लिए की गयी थी। गौ को उसके बछड़े के साथ पुनः संयुक्त कर गाय को उत्तम दुधारू बनाया।

बीज शब्द –

ऋभु–त्रैत, मनोचिकित्सक, शल्य–क्रिया, अश्विनीकुमार, मानव–चिकित्सक, पशु– चिकित्सक, गौ–वत्स–साहचर्य, पुनर्युवाकरण।

वैदिक देवताओं की एक विशेषता है कि प्रत्येक देवता का किन्हीं निश्चित देवों के साथ सान्निध्य दृष्टिगत होता है जो देवता के चरित्र की विशेषताओं का बोध कराने में सहायक होता है। ऋभुगण भी ऐसे देवता हैं जो अनेक देवताओं से उपकृत हुए प्रतीत होते हैं। मुख्यतः इन्द्र के साथ ऋभुओं का घनिष्ठ सम्बन्ध प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अश्विनी–कुमारों, प्रजापति, त्वष्टा, सविता, मरुत्, अग्नि आदि देवताओं के साथ भी इनका वर्णन यत्र–तत्र उपलब्ध है। अश्विनी–कुमारों के साथ इनका आह्वान[1] इनके चिकित्सक स्वरूप का द्योतक है। चिकित्सा और रोगोपचार के धरातल पर दोनों का ही अस्तित्व होने के कारण ये दोनों देव समरूप माने गये हैं।

इन्द्र के पश्चात् अश्विनीकुमार ही ऐसे देवता हैं जो ऋभुओं के साथ सर्वाधिक सम्बद्ध हैं। अनेक मन्त्रों में ऋभुओं और अश्विनीकुमारों की साथ–साथ स्तुति की गयी है। यथा –

"तं नो वाजा ऋभुक्षण इन्द्र नासत्या रयिम्।
समश्वं चर्षणिभ्य आ पुरु शस्त मघत्तये।।"[2]
अपि च – "उत ऋभव उत राये नो अश्विनो।"[3]

कतिपय स्थलों पर ऋभुओं और अश्विनीकुमारों के सह–निवास का भी उल्लेख मिलता है। अश्विन्द्वय को अदिति–पुत्र ऋभुओं के साथ प्रेमपूर्वक निवास करने वाला कहा गया है –

"यत् आदित्येभिः ऋभुभिः सजोषसा।"[4]

ऋभुओं ने अश्विनीकुमारों के लिये दिव्य, श्रेष्ठ, अकुटिल–पथगामी तथा अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में निर्बाध गति से परिभ्रमण करने वाले रथ की रचना की थी –

"तक्षन्नसत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्।
तक्षन्धेनुं सबर्दुघाम्।।"[5]

यह दिव्य रथ अश्व और प्रग्रह–रहित था –

"अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ।।"[6]

इस निर्माण कार्य के द्वारा ऋभुगण अश्विनीकुमारों से सम्बद्ध हो गये और इसीलिए स्तोता इन दोनों का साथ–साथ यज्ञ में आह्वान करते हैं –

"ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाऽऽदित्यैर्यातमश्विना।।"[7]

इस प्रकार वैदिक वाङ्मय में ऋभुओं को अश्विन् देवों के मित्र के रूप में चित्रित किया गया है। ऋभु रथ–निर्माण आदि के द्वारा अश्विनों को प्रसन्न करते हैं, तो अश्विनी उन्हें अपना सूक्त–भाक् बनाकर मित्रता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं। वस्तुतः मित्रता या तो समान स्तर वालों में होती है अथवा समान कार्य करने वालों में। चूँकि अश्विन् देव–देवताओं के कुशल भिषग् हैं अतः इससे ऋभुओं के चिकित्सक होने का भी संकेत मिलता है। इस बात से इसकी और अधिक पुष्टि होती है कि **जिस प्रकार अश्विन् देवों में जरावस्थापन्न च्यवन ऋषि को युवावस्था प्रदान की थी तथा दीर्घजीवी होने का वरदान दिया था, उसी प्रकार ऋभुओं ने अपने अति–वृद्ध माता–पिता को पुनः तरूण बनाया। अतएव स्पष्ट है कि ऋभुगण एक कुशल चिकित्सक हैं। ये न केवल मानव–चिकित्सक हैं, प्रत्युत पशु–चिकित्सक भी हैं। मानव–चिकित्सक के रूप में उन्होंने अपने वृद्ध माता–पिता को युवा बनाया तथा पशु–चिकित्सक के रूप में क्षीणकाय गौ को हृष्ट–पुष्ट और दुधारू बनाया।**

(1) मानव–चिकित्सक ऋभु :–

सरल स्वभाव वाले और सत्य–पथगामी ऋभु जीवन–विद्या तथा औषधि–प्रयोग में प्रवीण थे। इनके पास ऐसी विद्या थी जिससे ये वृद्ध को युवा बना देते थे। अपने इसी रोगोपचारक गुण के माध्यम से अपने वृद्ध माता–पिता को पुनः युवा बना दिया –

"युवाना पितरा पुनः सत्यमन्त्रा ऋजूयवः।"[8]

जीवन की क्रमशः तीन अवस्थायें होती हैं – बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था। इनके क्रम में किसी प्रकार का विपर्यय नहीं होता है। ऋभुओं ने इस क्रम का अतिक्रमण करते हुए अपने प्रयत्न से उन स्थविर माता–पिता को पुनः यौवन प्रदान किया[9] जो कृशकाय थे, जीर्ण–शीर्ण यूपकाष्ठ की भाँति पड़े हुए थे –

"पुनर्वे चक्रुः पितरा युवाना सना यूपेव जरणा शयाना।"[10]

ऋभुओं के इस पुनर्युवाकरण रूप कार्य के विषय में एक स्थल पर अतिकथन भी मिलता है कि उन्होंने अपने माता–पिता की रचना की थी –

"ये अश्विना ये पितरा य ऊती।"[11]

वस्तुतः यहाँ अतिकथन न होकर एक वैज्ञानिक अर्थ ही संकेतित है कि सृष्टि रचना प्रक्रिया में जब स्फोट से सृष्टि बनी तो हिरण्यांड का ऊपरी भाग द्यौ बना तथा निम्न भाग पृथ्वी। क्योंकि ऋभु मध्यस्थानीय वायु अथवा इन्द्र के ही एक रूप हैं अतः सिद्ध हो जाता है कि इन्होंने अपने माता–पिता की रचना की थी।

इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र में उल्लेख मिलता है कि जब उन्होंने द्यावा–पृथिवी को सम्पन्न बनाया तो उनकी दिव्य शक्ति की दुन्दुभि चारों ओर गूँज उठी थी –

"महत् तद् वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ।"[12]

निरूक्त[13] में "युवा" की परिभाषा की गई है कि **"प्रयौति कर्माणि" अर्थात् जो सतत् कर्मठ बना रहता है।** इस परिभाषा के अनुसार ऋभुओं द्वारा माता–पिता को पुनः युवा करने से यह तात्पर्य भी लिया जा सकता है कि अपने सुन्दर कर्मों के द्वारा उन्होंने अपने माता–पिता को इतनी प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि दी कि वृद्धावस्था में भी वे निरन्तर कर्मरत अर्थात् युवा रहते थें। वस्तुतः माता–पिता जीर्ण–शीर्ण वृद्धावस्था में तभी होते हैं जब उन्हें पुत्रों की ओर से कष्ट मिलता है किन्तु ऋभुगण तो ऐसे आदर्श पुत्र थे जो विभिन्न कार्यों को सहज की सम्पादित करके माता–पिता के हृदय को उल्लसित कर देते थे। ऋभुओं की माता–पिता को हर्षित करने वाली कार्य–सम्पादन की इस शैली का उल्लेख स्वयं ऋग्वेद में ही मिलता है –

"श्रोणामेक उदकं गामवाजति मांसमेकः पिंशति सूनयाभृतम्।

आ निम्रुचः शकृदेको अपाभरत् किं स्वित् पुत्रेभ्यः पितरा उपावतुः।।"[14]

निष्कर्षतः ऋभुओं द्वारा अपने माता–पिता को पुनः युवा करने के विषय में दो विचार प्राप्त होते हैं – प्रथमतः, उन्होंने अपने रोगोपचारक गुण के द्वारा जीर्ण–शीर्ण वृद्धावस्था वाले माता–पिता को युवा बनाया। द्वितीयतः, उन्होंने अपने शोभन कर्मों के द्वारा माता–पिता के हृदय को प्रसन्न करके उनमें कर्तृत्व–शक्ति का संचार किया। ऋभुओं ने किसी जादुई ढंग से नहीं, प्रत्युत मानवीय परिचर्या द्वारा उन्हें युवा बनाया था। इस प्रकार ऋग्वेद में ऋभुगण एक मनोवैज्ञानिक पुत्र चिकित्सक के रूप में भी सामने आते हैं।

(2) पशु चिकित्सक ऋभु :–

ऋग्वेद में ऋभुगण न केवल अद्भूत मानव भिषग्, प्रत्युत कुशल पशु चिकित्सक के रूप में उभरकर सामने आते हैं। पशु चिकित्सक के रूप में उन्होंने ऐसे अद्भुत सृजन किये जो आधुनिक विज्ञान की कल्पना से भी परे हैं। आधुनिक वैज्ञानिक कृत्रिम अंगारोपण को विज्ञान की सफलता या चमत्कार की संज्ञा देते हैं किन्तु ऋभुओं ने तो चर्म से गौ का निर्माण[15] कर इससे भी अद्भुत कार्य किया था। उन्होंने न केवल गाय का सृजन किया, अपितु उसे हृष्ट–पुष्ट और कामधेनु बनाया।

ऋभुगण उत्तम कोटि के शल्य–चिकित्सक थे। उन्होंने अपनी शल्य–क्रिया द्वारा चर्म से सर्व–प्रेरक तथा विश्व–रूपा गौर का निर्माण किया था जो कि अमृत–सदृश–दुग्ध[16] को देने वाली थी –

"रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम्।"[17]

ऋभुओं ने इस गौ की रचना बृहस्पति के लिये की थी क्योंकि एक मन्त्र में बृहस्पति के लिये कहा गया है कि वे विश्वरूपा गौ को ऊपर की ओर प्रेरित करते हैं –

"इन्द्रो हरी युयुजे अश्विना रथं बृहस्पतिर्विश्वरूपामुपाजत।"[18]

जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक अपने रोगी को प्रारम्भ में कुछ समय तक अपने संरक्षण में रखता है। उसके बाद ही उसकी शल्य–क्रिया करता है और उसे स्वास्थ्य–लाभ प्रदान करता है। तथैव ऋभुओं ने सर्वप्रथम संवत्सर–पर्यन्त मृतवत् गौर की रक्षा की। फिर संवत्सर–पर्यन्त गौर के अवयवों में शल्य–क्रिया द्वारा मांसारोपण करके उसे अद्भुत सौन्दर्य प्रदान किया और संवत्सर–पर्यन्त ही उसे तेज–सम्पन्न किया। अपने इस उत्तम शल्य–चिकित्सा–रूप कार्य के द्वारा उन्होंने मनुष्यत्व से देवत्व की प्राप्ति की –

"यत् संवत्समृभवो गामरक्षन् यत् संवत्समृभवो मा अपिंशन्।
यत् संवत्समभरन् भासो अस्यास्ताभिः शमीभिरमृतत्वमाशुः।।"[19]

ऋभुओं का एक अन्य कार्य है – गौर को उसके बछड़े के साथ पुनः मिला देना, जैसा कि निम्न मन्त्रांशों से स्पष्ट है –

"निश्चर्मण ऋभवो गामपिंशत सं वत्सेनासृजता मातरं पुनः।"[20]

"तक्षन् पितृभ्यामृभवो युवद् वयस्तक्षन् वत्साय मातरं सचाभुवम्।"[21]

यह कार्य समभवतः उनके द्वारा गाय को उत्तम दुधारू बनाने के कार्य से ही संबद्ध है। यह वास्तविकता है कि दुग्ध–दोहन से पूर्व दोहन–कर्त्ता वत्स द्वारा गाय का स्तन–पान करवाता है। वत्स द्वारा दुग्ध–पान कर लेने के उपरान्त ही गाय दूध देती है अतः वत्स को सहचरी गौर का दान देना वस्तुतः गौ से उत्तम दुग्ध प्राप्त करने का ही एक चरण है।

निष्कर्षतः, ऋग्वेद में ऋभगण एक निपुण चिकित्सक के रूप में दृष्टिगत होते हैं। अश्विनीकुमारों के साथ स्तुत्य ऋभुदेव न केवल मानवीय चिकित्सक के रूप में, अपितु पशु–चिकित्सक के रूप में भी वैदिक वाङ्मय में उल्लिखित हैं। जिस प्रकार अश्विनीकुमारों ने च्यवन ऋषि को युवा बनाया था, उसी प्रकार इन्होंने भी अपने वृद्ध माता–पिता को युवा बनाया। मनोवैज्ञानिक चिकित्सक के रूप में कार्य करते हुए किसी चमत्कारिक क्रिया से नहीं, अपितु मानवीय परिचर्या द्वारा अपने माता–पिता को तरुण बनाया था। दक्ष पशु–चिकित्यक के रूप में शल्य–क्रिया में निष्णात ऋभुदेवों ने चर्म से सर्वप्रेरक, विश्वरूपा गौर की बृहस्पति देव के लिए सर्जना की। गौ में जीवनशक्ति का संचार किया तथा बछड़े को सहचरी गौ प्रदान कर गाय को उत्तम दुधारू बनाया।

सन्दर्भ –

1. ऋग्वेद – 1.111.4
2. ऋग्वेद – 4.37.8
3. ऋग्वेद – 5.46.4
4. ऋग्वेद – 8.9.12
5. ऋग्वेद – 1.20.3
6. ऋग्वेद – 4.36.1
7. ऋग्वेद – 7.35.15
8. ऋग्वेद – 1.20.4
9. ऋग्वेद – 1.110.8; 1.111.1; 4.35.5
10. ऋग्वेद – 4.33.3

11. ऋग्वेद – 4.34.9
12. ऋग्वेद – 4.36.1
13. निरुक्तम् – 4.3.39
14. ऋग्वेद – 1.161.10
15. ऋग्वेद – 1.110.8
16. ऋग्वेद – 1.20.3
17. ऋग्वेद – 4.33.8
18. ऋग्वेद – 1.161.6
19. ऋग्वेद – 4.33.4
20. ऋग्वेद – 1.110.8
21. ऋग्वेद – 1.111.1